

By Shri. Seema Chaudhary,
Bihar College of Education
Sub- C-2 - Contemporary
India and Education

Q. प्राच्य - पाश्चात्य विवाद के मुख्य बिन्दुओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर इस विवाद का जन्म ईस्ट इंडिया कंपनी के 1813 के आला पत्र (Charter Act, 1813) से हुआ। प्रथम बात तो यह है कि इस आला पत्र में यह तो निर्देश दिया गया था कि ब्रिटिश कम्पनी द्वाराित क्षेत्रों में शिक्षा की व्यवस्था करना कम्पनी का उत्तरदायित्व होगा परन्तु यह स्पष्ट नहीं किया गया था कि शिक्षा का स्वरूप क्या होगा। दूसरी बात यह है कि उसी द्वारा पत्र में जो एक लाख रुपये की धनराशि प्रतिवर्ष साहित्य के रख-रखाव और भारतीय विद्वानों के प्रोत्साहन और भारतीयों को पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान का ज्ञान कराने के लिए निश्चित की गई थी उसमें साहित्य और भारतीय विज्ञान की व्यवस्था नहीं की गई थी। कंपनी के अधिकारियों ने इन दोनों शब्दों का अर्थ अलग-अलग लिया जिसके कारण कम्पनी में दो वर्ग बन गए - एक प्राच्यवादी और दूसरा पाश्चात्यवादी।

प्राच्यवादी वर्ग —

इस वर्ग में अधिकतर कम्पनी के वरिष्ठ एवं अनुभवी अधिकारी थे। ये 1813 के आला पत्र के साहित्य शब्द से अर्थ भारतीय साहित्यों से लेते थे और भारतीय विज्ञान से अर्थ भारतीय साहित्यों के विद्वानों से लेते थे, वे चाहते थे कि -

- भारत में भारतीय भाषाओं (संस्कृत, हिन्दी और अरबी आदि) के माध्यम से शिक्षा दी जाये।
- भारत में भारतीय भारतीय साहित्यों एवं ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा दी जाये।
- कुछ उदारवादी भारतीयों को पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान का सामान्य ज्ञान करने के भी पक्ष में थे।

परंतु जब संबंध में उनके अपने-अपने तर्क थे, कोई भारत के हित की दृष्टि से ऐसा सोच रहे थे और कुछ ब्रिटेन की हित की दृष्टि से ऐसा सोच रहे थे। भारत के हित की दृष्टि से सोचने वालों के अपने तर्क थे - भारत की अपनी संस्कृति है उसकी संस्कृति की रक्षा के लिए उसकी भाषा और साहित्य की शिक्षा देना आवश्यक है और ब्रिटेन की हित की दृष्टि से सोचने वालों के अपने तर्क थे -

- प्रिन्सप आदि का तर्क था कि भारतीय पाश्चात्य भाषा, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने भोग्य नहीं हैं।
- विल्सन आदि का तर्क था कि भारत में पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा देने से भारत में अंग्रेजों का विरोध हो सकता है।
- कुछ का तर्क था कि पाश्चात्य भाषा, साहित्य और ज्ञान-विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर भारतीय उनके (यूरोपीयों के) समकक्ष हो जाएंगे।
- कुछ का तर्क था कि पाश्चात्य भाषा,

साहित्य और ज्ञान-विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर भारतीय जागरूक हो जाएंगे और भारत में प्रिंटिंग के जालन को उखाड़ फेंकेंगे।

पाश्चात्यवादी वर्ग

इस वर्ग में अधिकतर कंपनी के युवा अधिकारी थे। ये 1813 के आज़ादगी के साहित्य बालक का अर्थ पाश्चात्य साहित्य से लेते थे और भारतीय विज्ञान का अर्थ पाश्चात्य साहित्य के भारतीय विद्वानों से लेते थे, ये चाहते थे कि -

- भारतीयों की शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी हो।
- भारतीयों को पाश्चात्य भाषा और साहित्य का ज्ञान कराया जाए।
- कुछ कट्टरवादी ईसाई धर्म की शिक्षा अनिवार्य करने के पक्ष में थे।

परंतु इस लंबे समय में इनके अपने-अपने तर्क थे, कोई भारत के हित की दृष्टि से देखा लोच रहे थे और कुछ प्रिंटिंग की हित की दृष्टि से देखा लोच रहे थे। भारत के हित की दृष्टि से लोचने वालों के अपने तर्क थे -

- राजाराममोहन राय का तर्क था कि इस शिक्षा से भारतीय आधुनिकतम ज्ञान-विज्ञान से परिचित होंगे और अपनी उन्नति करेंगे। प्रिंटिंग के हित की दृष्टि से लोचने वालों के तर्क थे -

- भारत में पश्चिमी संस्कृति का विकास किया

- जा लवेंगे।
- कंपनी के व्यापार और शासन कार्य के लिए अंग्रेजी पढ़े-लिखे कनिष्ठ कर्मचारी तैयार किए जा लवेंगे।
- कम्पन भारत में अंग्रेजपक्ष लोक तैयार किए जा लवेंगे जो जन्म से भारतीय होंगे पर विचारों से अंग्रेज।
- भारत में ब्रिटिश शासन की जैसे मजबूत होगी।

परिणाम

इस प्राच्य-पश्चात्त्य विवाद के कारण कंपनी 90 वर्ष तक अपनी कोई शिक्षा नीति नहीं तय कर सकी और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि यह विवाद न केवल कंपनी के अधिकारियों के बीच आं अविभक्त ब्रिटेन के पार्लियामेंट के सदस्यों के बीच भी उत्पन्न हो गया था। भारतीयों के बीच में तो यह विवाद होना स्वभाविक था। 1823 में कंपनी ने इस समस्या पर विचार करने हेतु 10 सदस्यीय एक समिति का गठन किया। परंतु इनमें भी दो वर्ग बन गए - एक प्राच्यवादी और दूसरा पश्चात्त्यवादी। और यह समस्या अथावत बनी रही।

By Dr. Seema Chaudhary
12/10/2020